# अमर शहीद

**लेखक : जस्टिस पंडित व्यास देव मिश्रा देहली**
**अनुवादक : श्री मिर्ज़ा सज्जाद हुसैन**

संसार नश्वर, संसार–वासी नश्वर, संसार की प्रत्येक वस्तु नश्वर, संसार की किसी वस्तु को स्थायी जीवन प्राप्त नही है। चाहे वह गुल्मलता हो अथवा पुष्प एंव वाटिका, चाहे वह मरूस्थल तथा उपजाऊ क्षेत्र हों अथवा दरिद्र व धनाशय व्यक्ति हों सब नश्वर हैं। यहां तक कि तिथियाँ तथा घटनाएं भी भूला दी जाती हैं। कोई राजा अथवा नेता मृत्यु के पश्चात कुछ समय तक जीवित रहता है तथा धीरे धीरे उसका नाम भी मिट जाता है। यदि उसके आचरण एंव व्यवहार अच्छे हाते हैं तो संसार अधिक समय तक याद रचाता है परन्तु यदि वह चरित्र भ्रष्ट एंव दुष्ट आचरण का होता है तो उसकी स्मृति आधिक समय तक नहीं रहती है। समस्त सांसारिक व्यवस्था इसी नियम के अनुसार कार्यान्वित है मनुष्य यदि इसे बदलना चाहे तो बदल नहीं सकता। जब तक यदि दुनिया है यह परिवर्तन होते ही रहेंगे तथा इसी के साथ साथ हम भी परिवर्तित होते जाएंगे। राज्य सिंहासन भी परिवर्तित होंगे, समय भी बदलेगा, संसार के बसने वालों में भी परिवर्तन आएगा।

जहां आज गगन चुम्बी अट्टलिकाएं हैं, अनन्त भोग विलास की सामग्री जुटी हुई है, शायद कल वहां चाहे कुछ न हो, जहां आज अति सुन्दर एंव मनोहारी वाटिकाएं एंव उद्यान हैं शायद कल वहां मरूस्थल दृष्टिगोचर हों। क्रान्ति आते देर नही लगती, देखते ही देखते नगर अस्त व्यस्त हो जाते हैं, घर नष्ट–भ्रष्ट हो जाते हैं परिवार के परिवार उजड़ जाते हैं। जो घर प्रातः भाई, भतीजों, पुत्रों, छोटों–बड़ों तथा मित्र सम्बन्धियों से परिपूर्ण था मध्यान्ह होते–होते वहां धूल उड़ने लगती है। भाई से बहिन छूट जाती है, बच्चों से माताओं की गोदें सूनी हो जाती हैं, सर से मालिक का साया उठ जाता है, सुहागनें विधवा हो जाती हैं, लोग विरोधी हो जाते हैं, भाग्य विपक्ष में हो जाता है, काल (समय) अंधकारपूर्ण दृष्टिगोचर होने लगता है, हास्य रूदन में परिवर्तित हो जाता है तथा जिस ओर दृष्टि डालिए शोक व रूदन के अतिरिक्त कुछ और दीख नहीं पड़ता।

जो वस्तु निर्मित हुई है वह बिगड़ेगी अवश्य, किसी वस्तु का उत्पन्न होना उसके अन्त का सर्व प्रमुख प्रमाण है। हिंसक पशु, पशु एंव पक्षी (खग–वृन्द) सभी नश्वर हैं, सूर्य व चन्द्रसब मिट जाएंगे, आकाश तारागणों से खाली हो जाएगा, आकाश की कमर टूट जाएगी, मृत्यु का देवता चारों ओर दौड़ता दृष्टिगोचर होगा। एक समय ऐसा भी आएगा जब मृत्यु को भी मृत्य का सामना करना पड़ेगा। कहीं कोई वस्तु शेष न रह चुकी होगी, जिसकी अडिगता से आकाश भी थरथरा जाता है, जिसका धैर्य एंव दृढ़ता ईश्वरीय इच्छा पर छा गया है, जिसके साहस को क्रान्तियां अचम्भित होकर देख रही हैं। जिसकी तीन दिन की भूख तथा प्यास समस्त संसारों को हिला सकती है। ऐसा अमर एंव अजर व्यक्ति कौन है? वह है अल्लाह का भेजा हुआ इमाम, हज़रत मोहम्मद[स0] का दौहित्र, हज़रत अली का सुपुत्र, हज़रत फ़ातिमा का लाल, इमाम हसन का लघु भ्राता हुसैन।

वह हुसैन जो इस्लाम धर्मानुयायीयों के लिए सत्य दीप तथा अन्य धर्माबलम्बियों के लिए ज्ञान दीप तथा संसार के लिए ''पूर्ण धर्म'' बन कर आया। क्यों न हो मनुष्य अत्यधिक दलित होता जा रहा था, लोगों के चरित्र जितने अधिक दूषित हो सकते थे हो चुके थे। मदिरा पान पर कोई प्रतिबन्ध शेष न रह गया था, अत्याचार तथा दूसरों को कष्ट पंहुचाना बिल्कुल प्रचलित हो चुका था। मानवता क्रूरता का नाम था। जो सत्य मार्ग पर चलने का विचार करता मृत्यु के घाट उतरवा दिया जाता। जो तनिक उभरने (विरोध करने) का प्रयत्न करता वह तथा उसके परिवार सम्बन्धी मार डाले जाते। असत्य इतना अधिक प्रभुत्व प्राप्त कर चुका था कि अल्लाह के सच्चे अनुयायी व उपासक भी उसमें शरण ले रहे थे। ऐसी सुदृढ़ शक्ति

का मुक़ाबला करना, साधारण व्यक्ति का काम न था। इस असत्य से परिपूर्ण राज्य का मुक़बला करने के हेतु हज़रत इमाम हुसैन "पूर्ण धर्म" बनकर कार्य क्षेत्र में अवतरित हुए। अकेले नही आए बल्कि छोटे छोटे बच्चे भी साथ लाए गृह महिलाओं को साथ लाए, संक्षेप में यूं कहूं कि अली व फ़ातिमा के अजीवन का पारिश्रमिक समर्पित करने के लिए साथ लाए। वह संसार को बतला रहे थे कि जिस वस्तु के संरक्षण के हेतु मैं आया हूँ वह अति मुल्यवान है, उसके संरक्षण के हेतु पुत्रों का बलिदान हो सकता है, भाइयों की जानें जा सकती है, छः मास का बालक गले पर तीर खा सकता है, देवियां विधवा हो सकती हैं शिविर जलाए जा सकते हैं, हज़रत मोहम्मद के घर की स्त्रियों के सरों से चादरें छिन सकती हैं परन्तु धर्म को मिटने नहीं दिया जा सकता।

यह वह दीप है जिसको हज़रत मोहम्मद ने ईश्वरीय धाम में जलाया, जिसने हज़रत अली की खडग् की छाया में शरण ली, जिसको हज़रत फातिमा के सतीत्व ने चार चांद लगाए, जिसको इमाम हसन के बलिदान ने प्रेरणा प्रदान की। हज़रत मोहम्मद की अमानत अब हुसैन के पास पंहुची और किस समय पंहुची जबकि प्रत्येक ओर अज्ञान का साम्राज्य था, अंधकार छाया हुआ था, बहुसंख्यक इसके इच्छुक कि यह ज्ञान दीप सदैव सदैव के लिए बुझा दिया जाए हुसैन की इच्छा थी कि प्राण जाते हैं तो जाये, बच्चों को बलिदान करना पड़े तो पड़े, शिविर लुटते हैं तो लुटें, गृह देवियाँ बन्दी बनायी जाती हैं तो बनायी जायें परन्तु मोहम्मद का प्रकाश दीप बुझने न पाये। नाना हज़रत मोहम्मद का यह कथन सदा सामने रहताः—

**हुसैन मुझ से हैं और मैं हुसैन से हूँ**

कथन का आधा भाग कि हुसैन मुझसे हैं, एक स्वयं सिद्ध वस्तु है परन्तु मैं हुसैन से हूँ यह सिद्ध होना शेष था। हज़रत मोहम्मद का आशय सम्भवतः यही था कि हुसैन मुझे और मेरे नाम को जीवित करेगा और इसीलिए कहा था कि मैं हुसैन से हूँ तथा यही कारण था कि हुसैन अपना सर्वस्व लेकर कर्बला में आए (बलिदान के लिए) ताकि संसार देख ले और समझ ले कि हज़रत मोहम्मद के दौहित्र का उद्देश्य बहुमूल्य है और वह धर्म का संरक्षण है। असत्य के समर्थकों के मुक़ाबले में इमाम हुसैन की सेना की वही हैसियत थी जो शायद प्रलय के दिन नरक वासियों और स्वर्ग वासियों की हो। हुसैन की मुट्ठी भर सेना में हबीब इब्ने मज़ाहिर जैसे वयोवृद्ध, अली असगर जैसे दुध पीते बालक भी सम्मिलित हैं। हुसैन ने क़सिम जैसा भतीजा, अब्बास जैसा भाई, सत्य मार्ग में बलिदान कर दिया फिर भी यज़ीदियों के पाहन हृदय मोम न हुए। यह देखकर कि मेरे शत्रु मेरे नाना का कलमा पढ़ने वाले हैं हज़रत अली अकबर को भेजा जो कि हज़रत मोहम्मद से रूप व आकार में बिल्कुल मिलते जुलते थे परन्तु वे हज़रत मोहम्मद और उनके अनुयायियों के इतने विरोधी हो गये थे कि हज़रत मोहम्मद की तस्वीर को भी मृत्यु के घाट उतार दिया तथा अली अकबर जैसे पुत्र का रक्त हुसैन के आगे बहा दिया तथा इसी पर अन्त नहीं हुआ बल्कि इमाम हुसैन को भी शहीद किया गया। शिविरों में आग लगा दी गयी, स्त्रियों के आभूषण छीन लिए गए तथा उन्हें बन्दी बनाया गया।

हुसैन ने कुछ घन्टों में अपना समस्त परिवार लुटा दिया। सत्य मार्ग पर प्राण निछावर करने आए थे शहीद हो गये। जिस उद्देश्य के लिए निकले थे वह पूर्ण किया। संसार को दिखा दिया कि सत्य मार्गानुयायी इस प्रकार बलिदान देते हैं। आज किसी जाति व धर्म में ऐसा उदाहरण नही मिलता। हुसैन ने संसार के प्रत्येक सम्प्रदाय को, प्रत्येक धर्म को सत्य मार्ग में प्राण देने का पाठ पढ़ाया। हुसैन की शहादत इस बात को प्रकट करती है कि यदि धर्म में ऐसा उदाहरण नही मिलता। हुसैन ने संसार के प्रत्येक सम्प्रदाय को, प्रत्येक धर्म को सत्य मार्ग में प्राण देने का पाठ पढ़ाया। हुसैन की शहादत इस बात को प्रकट करती है कि यदि धर्म में अडिग व अनन्य विश्वास हो तो प्राणों का त्यागना अत्यंत सरल कार्य प्रतीत होता है, कोई कठिनता प्रतीत नहीं होती। एक कर्बला की अद्वितीय घटना है जिसने इस्लाम के इतिहास को रंगीन बनाया तथा धर्म का सर्वाधिक प्रचार किया। मुझे विश्वास है कि धीरे धीरे संसार कर्बला की घटना से शिक्षा ग्रहण करेगा तथा एक ऐसा समय अवश्य आ जाएगा जब हुसैन के बतलाए हुए मार्ग पर चलना। प्रत्येक व्यक्ति का धर्म होगा तथा संसार से अत्याचार व हिंसा, क्रूरता तथा कठोरता का सदैव के लिए अन्त हो जाएगा।

(इमामिया मिशन का प्रकाशन नं0 390 /मुहर्रम, 1373)